17 सितम्बर 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 12 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

सितम्बर (द्वितीय), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 26 अगस्त से 5 सितम्बर, 2017 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ कोहेफिजा में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रात:काल कल्पद्रुम महामण्डल विधान का आयोजन पण्डित सुनीलजी धवल द्वारा कराया गया। विधान के बीच में पण्डित अच्युतकांतजी द्वारा जलाभिषेक पाठ पर प्रवचन एवं दोपहर को देव-शास्त्र-गुरु पूजन के आधार पर कक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत एनिमेटेड वीडियो दिखाये गये।

क्षमावाणी के अवसर पर मध्यप्रदेश के वित्तमंत्री श्री जयंतजी मलैया तथा भोपाल के महापौर श्री आलोकजी शर्मा द्वारा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल तथा पण्डित अच्युतकांतजी का सम्मान किया गया। श्री मलैयाजी ने डॉ. भारिल्ल के बारे में कहा कि आप देश-विदेश में जैन तत्त्वज्ञान को सूरज की भांति प्रकाशित कर रहे हैं, आपका प्रवचन सुनकर मैं अपने आपको धन्य अनुभव कर रहा हूँ। श्री अशोकजी शर्मा ने डॉ.भारिल्ल का गुणानुवाद करते हुये कहा कि हमारे हिन्दू समाज में भी कई पण्डित, विद्वान हैं; परन्तु जो वाणी की मिठास, ज्ञान का भण्डार और जैनधर्म को प्रगट करने वाली ज्ञान-ज्योति डॉ. भारिल्ल में है वो देश के किसी अन्य जैन/जैनेतर विद्वान में नहीं।

श्वेताम्बर पर्यूषण में...

श्वेताम्बर पर्यूषण के अवसर पर मुम्बई के चौपाटी सर्किल पर स्थित भारतीय विद्या भवन के विशाल वातानुकूलित हॉल में डॉ. भारिल्ल के विभिन्न विषयों पर व्याख्यान हुये। एक-एक व्याख्यान बालकेश्वर स्थित कमला हॉल में एवं भूलेश्वर में भी हुये।

द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ सिद्धायतन में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' द्वारा प्रात: समयसार एवं दोपहर में इष्टोपदेश पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही डॉ.दीपकजी जैन वैद्य जयपुर द्वारा दोपहर में इष्टोपदेश एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर चारों अनुयोगों की शैली में व्याख्यान हुये। प्रात: ब्र. महेन्द्रजी द्वारा दशलक्षण विधान संपन्न कराया गया तथा रात्रि में छात्रावास के छात्रों द्वारा प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इस अवसर पर 70 हजार रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुंचा। इसके अतिरिक्त आगामी प्रशिक्षण शिविर का आमंत्रण एवं शाश्वतधाम-उदयपुर पंचकल्याणक का आमंत्रण भी दिया गया। कार्यक्रम में लगभग 900-1000 साधर्मियों ने लाभ लिया।

औरंगाबाद (महा.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण महामंडल विधान के अतिरिक्त ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रात: दशलक्षण धर्म एवं रात्रि में ज्ञानस्वभाव-ज्ञेयस्वभाव विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित निखिलजी शास्त्री द्वारा दोपहर में पंचभाव एवं रात्रि में पाप-पुण्य व धर्म-धर्मी विषय पर प्रवचन हुये।

बेलगांव (कर्नाटक) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा दोनों समय मोक्षमार्गप्रकाशक एवं समयसार कलश विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त स्थानीय शास्त्री विद्वानों के अन्तर्गत सोमिल शास्त्री द्वारा क्रमबद्धपर्याय व दशलक्षण धर्म, सुधर्म शास्त्री द्वारा समयसार, मिथुन शास्त्री द्वारा विभिन्न विषय, अक्षय वाडकर शास्त्री द्वारा इष्टोपदेश पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

प्रात:काल 16 कारण भावना पूजन एवं लघु शांति विधान का भी आयोजन हुआ। इसके अतिरिक्त एक दिन सभी स्थानीय पाठशालाओं को एकत्रितकर भक्ति प्रतियोगिता आयोजित की गयी। सभी कार्यक्रम श्री रामन्ना कस्तूरी, श्री रमेशजी चिवटे एवं सुधर्म शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुये।

दिल्ली : यहाँ आत्मार्थी ट्रस्ट में दशलक्षण पर्व के अवसर पर ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री द्वारा प्रात: छहढाला की कक्षा एवं समयसार पर प्रवचन हुये। साथ ही पण्डित अनुभवजी शास्त्री कानपुर द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: दशलक्षण मंडल विधान व योगसार विधान का आयोजन हुआ एवं उनका अर्थ भी बताया गया। इसके अतिरिक्त प्रात: गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन, दोपहर में आत्मार्थी बालिकाओं और स्थानीय विद्वानों द्वारा प्रवचन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

(शेष पृष्ठ 7 पर ...)

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

पण्डित राजेशजी ने बहुत प्रेमपूर्वक उन्हें समझाया – ''नहीं भाई ! ऐसी बात नहीं है, आप जो भी करते हैं, ज्ञानी धर्मात्मा लोग भी वही सब करते हैं। बाह्य क्रियाओं में कोई अन्तर नहीं होता है, फर्क होता है समझ–नासमझ में। समझपूर्वक की गई यही सब क्रियायें सार्थक हो जाती हैं और नासमझी में की जाने से यही सारा श्रम निरर्थक हो जाता है। अत: हम जो कुछ भी करें, समझपूर्वक करें।

देखो, जिसप्रकार किसान खेत को साफ करे, जोते, नींदे, गोड़े, पानी भी देवे, बाड़ भी लगाये, पूरा परिश्रम करे और बीज न डाले तो क्या उस खेत में धान की फसल उगेगी ?''

जिज्ञासु ने कहा –''नहीं बिलकुल नहीं उगेगी, भला बीज बोए बिना भी कभी फसल उगती है ?''

राजेश ने कहा –''बस यही स्थिति धर्म की है। सम्यग्दर्शन धर्म का बीज है और बाह्य क्रियायें धर्म रूप खेत की निंदाई–गुड़ाई, सफाई व सिंचाई करने के समान हैं।

हम लोगों ने अब तक अपने–अपने धर्म के खेत को सब तरह से तैयार तो किया, पर उसमें सम्यग्दर्शन रूप धर्म का बीज नहीं बोया। इसकारण ही उसमें सम्यक् चारित्र रूप धर्म के फलों से भरपूर वीतरागता, समता एवं सच्चा सुख–शान्ति देने वाली फसल नहीं लगी। हमने पुण्य–पाप के बीज ही बोए हैं, अत: उसके फल में संसार में जन्म–मरण करने रूप आकुलता और दु:ख की घास ही घास उगती रही है।

मैं इसमें अपने पूर्वजों का दोष नहीं मानता, उन्होंने तो हमें सही मार्गदर्शन ही दिया था, पर उसके समझने में हम ही कहीं चूके हैं। देखिए कैसी–कैसी भूलें हो जाती हैं हमसे ? जिनकी हम और आप कल्पना भी नहीं कर सकते।

इस प्रसंग में मुझे अपनी भूल का अहसास कराने वाली एक कहानी याद आ रही है। यदि आपकी आज्ञा हो तो कहूँ ?

एक सज्जन ने कहा –''कहिए, अवश्य कहिए, यहाँ और इस समय नहीं कहेंगे तो कहाँ व कब कहेंगे।

राजेशजी ने अपनी बात की पुष्टि में कहानी प्रारम्भ करते हुए कहा ''एक रोगी वैद्य के पास गया, वैद्यजी ने रोग का भलीभांति परीक्षण करके एक नुस्खा लिखा और बहुत ही जता–जताकर अच्छी तरह समझाया कि इसे कूटकर, पीसकर कपड़छन करके खाली पेट मिश्री की चासनी में मिलाकर चाटना, भगवान ने चाहा तो एक ही खुराक में गारंटी से तुम्हारा रोग ठीक हो जायेगा। परसों आकर मुझे रिपोर्ट देना।''

पर उस नुस्खे से उसे बिलकुल भी आराम नहीं मिला। अत: वह शिकायत की मुद्रा में वैद्यजी के पास पहुँचा और व्यंग में बोला – ''क्या आपकी सब दवायें भगवान के भरोसे पर ही काम करती हैं ? आपके भगवान ने नहीं चाहा और मुझे एक रत्तीभर भी आराम नहीं मिला।''

वैद्यजी को भारी आश्चर्य हुआ –''यह हुआ कैसे ? दवा तो रामबाण औषधि है, लाभ न हो – ऐसा तो हो नहीं सकता ? पर मरीज भी तो असत्य नहीं बोल रहा है।''

सोचते–विचारते वे निराशा के स्वर में बोले–''लाओ दिखाओ पर्चा देखें, नुस्का लिखने में कहीं कोई भूलचूक तो नहीं हुई?''

रोगी बोला –''क्या ? पर्चा ! कैसा पर्चा ?''

''अरे ! वही पर्चा, जो मैंने लिखकर दिया था''– वैद्यजी ने कहा।

''वह तो दवा थी न ? उसे ही तो मैंने कूटकर, पीसकर, छानकर चासनी में चाटा है।''

वैद्यजी ने रोगी की नासमझी पर अपना माथा ठोक लिया।

''लगता है धर्मका स्वरूप समझने में यही स्थिति हमारीहुई है।''

राजू ने आगे अपने वक्तव्य में सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र पर जोर देते हुए कहा – ''भला जिसे तीर्थंकर भगवान ने धर्म कहा हो, उसे कैसे नकारा जा सकता है ? आचार्यदेव ने सम्यग्दर्शन का स्वरूप समझाते हुए यह भी तो लिखा है कि व्यवहार से सच्चे देव–शास्त्र–गुरु का यथार्थ श्रद्धान सम्यग्दर्शन है। देव–शास्त्र–गुरु व आत्मा के श्रद्धानपूर्वक इनका ज्ञान ही सम्यग्ज्ञान है तथा निज आत्मा में रमना, जमना और उसीमें समा जाना सम्यक्चारित्र है। देखो ! देव–गुरु–धर्म के श्रद्धान से सात तत्त्व का श्रद्धान भी यथार्थ हो जाता है।

जिस वीतरागी देव, निर्ग्रन्थ गुरु और स्याद्वाद वाणी का दर्शन–पूजन और अध्ययन–मनन हम करते हैं, उनका स्वरूप

क्या है ? हमारे द्वारा किए जा रहे दर्शन-पूजन का प्रयोजन क्या है ? ये सब हम क्यों करते हैं ? इनके सिवाय और भी जो-जो क्रियायें हम धर्म के नाम पर करते हैं, वे क्यों करते हैं ? उनके करने से हमें क्या लाभ है ? यदि हम इस दिशा में सोचेंगे-विचार करेंगे तो हमें स्वयं समझ में आ जायेगा कि वस्तुत: धर्म क्या है और उसकी प्राप्ति कैसे होती है ?

अरे भाई ! धर्म कोरी परम्पराओं के पालने या निर्वाह करने में नहीं है, वह तो स्व-परीक्षित साधना है। अत: हमें परीक्षा प्रधानी बनना पड़ेगा। केवल परम्परागत बाह्य आचरण धर्म नहीं हो सकता; क्योंकि उसमें तो केवल राग की ही पूर्ति होती है, वीतरागता की प्राप्ति नहीं होती।

अकेली धर्म की परिभाषायें याद कर लेने और उन्हें भले प्रकार अभिव्यक्त करने से भी धर्म प्रगट नहीं होता। परिभाषाओं की पुनरावृत्ति तो हमसे अच्छी टेपरिकॉर्डर कर लेता है तो क्या वह धर्मात्मा हो जायेगा ? अरे ! जब वह आत्मा ही नहीं तो धर्मात्मा कैसे हो सकता है ? उन परिभाषाओं का भी प्रयोग करना होगा, उन्हें अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना होगा - तभी वीतराग धर्म की प्राप्ति हो सकेगी।

वस्तुत: धर्म तो अपना स्वभाव है। क्रोध-मान-माया-लोभ, राग-द्वेष-मोह, अज्ञान आदि आत्मा के स्वभाव के विपरीत भाव हैं, अत: ये धर्म नहीं, बल्कि अधर्म हैं। त्यागने योग्य जानकर इनका हेयरूप श्रद्धान करना तथा वीतरागता, सर्वज्ञता, समता, शान्ति, निराकुलता, दर्शन-ज्ञान-चारित्र आत्मा के स्वभाव हैं; अत: ये सब आत्मा के धर्म हैं। इन्हें उपादेय रूप जानकर दोनों का यथार्थ श्रद्धान करना ही सम्यग्दर्शन है और यही वास्तविक धर्म है। ऐसे आत्मधर्म की प्राप्ति हम सबको शीघ्र हो, ऐसी शुभकामना के साथ मैं अपने वक्तव्य से विराम लेता हूँ।''

राजू के इस मार्मिक वक्तव्य को सुनकर लोगों ने दाँतों तले अंगुली दबा ली।

एक ने कहा -''अरे ! वाह भाई वाह !! यह वही राजू है जो एक दिन संजू के साथ रहकर आवारा बन गया था। धन्य है भाई तुझे और तेरे उन माता-पिता को, जिन्होंने अपना पुत्रमोह छोड़कर पाँच वर्ष के लिए सिद्धांत महाविद्यालय में भेजकर और ऐसा पढा-लिखाकर तुझे इस योग्य बना दिया।'' **(क्रमश:)**

पधारिये ! अवश्य पधारिये !!

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के निर्देशन में

नागपुर (महा.) में आयोजित

श्री आदिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

शुक्रवार, दिनांक 24 नवम्बर से मंगलवार, 28 नवम्बर, 2017 तक

मंगलमय आमंत्रण

इस पंचकल्याणक में तत्त्ववेत्ता **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** आदि अनेक विद्वानों का समागम प्राप्त होगा। यह पंचकल्याणक प्रतिष्ठाचार्य **बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री** खनियांधाना के प्रतिष्ठाचार्यत्व में संपन्न होगा।

आत्मा से परमात्मा बनने के इस लोकोपकारी महायज्ञ में
इष्ट-मित्रों एवं परिवारजनों सहित पधारने हेतु

आपको हमारा भावभीना हार्दिक आमंत्रण है।

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

यदि हम सफलतापूर्वक किसी निश्चित गंतव्य तक पहुंचना चाहते हैं तो उसकी एक सुनिश्चित प्रक्रिया व कुछ अनिवार्य शर्तें हैं–

– हमें अपना लक्ष्य भलीभांति ज्ञात होना चाहिये।

– लक्ष्य तक पहुंचने का संकल्प दृढ हो।

– मार्ग ज्ञात हो।

– साधन उपलब्ध हों।

– अवरोधों का सामना करने की क्षमता और तैयारी हो।

– गतिशीलता बनी रहे।

– जागरूकता व सावधानी बनी रहे।

– हम दुविधा रहित अपने लक्ष्य के प्रति सम्पूर्णत: समर्पित हों।

उपर्युक्त में से यदि कोई भी कमी हो तो यह तय है कि हमें सफलता नहीं मिल सकती है। हम अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकते हैं।

हमारा सौभाग्य है कि **हमने जैन कुल में जन्म लिया है, हमें जिनवाणी का आश्रय मिला है, मूलतत्त्वज्ञान की प्राप्ति हुई है और इसलिये हम संस्कारवश ही मोक्षार्थी हैं और हम कह सकते हैं कि हमारा एकमात्र अन्तिम लक्ष्य मोक्ष पाना ही है, अन्य कुछ नहीं।** (मोक्ष पाना जिनका लक्ष्य नहीं है उनकी चर्चा पृथक् से करेंगे)

यदि आज हम अपने बालकों से भी पूछें कि 'आप क्या बनना चाहते हो?' तो एक ही जवाब मिलेगा ''भगवान'' अन्य कुछ नहीं।

यह एक कठोर यथार्थ है कि 'मात्र मनोरथ से कार्यों की सिद्धि नहीं होती है' हमें भगवान तो बनना है पर क्या हम भगवान का स्वरूप जानते हैं?

हमें मोक्ष तो जाना है पर क्या हम मोक्ष का स्वरूप समझते हैं?

यदि कोई हमसे पूछे कि 'आपको भगवान क्यों बनना है, मोक्ष क्यों जाना है? तो हमारा जवाब होगा 'अनन्त सुखी होने के लिये', पर क्या हम सच्चे सुख (अतीन्द्रिय सुख) से परिचित हैं?

कहने–सुनने में भी बहुत अच्छा लगता है और हम एक आत्ममुग्धता की स्थिति में जीवन व्यतीत करते हैं कि 'हमें यह मानव देह, सुकुल (जैन कुल) और जिनवाणी को सुनने–समझने का अत्यंत दुर्लभ संयोग मिला है और इसलिये हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं।'

यद्यपि उक्त तथ्य आंशिक रूप से सत्य भी है पर मात्र तभी **जब हम अपने इन स्वर्णिम संयोगों का उपयोग भव का अभाव करने में कर सकें। यदि ऐसा नहीं होता है और हमारा यह जीवन संसार के विस्तार में ही निमित्त बनता है तो उक्त स्वर्णिम संयोगों का प्रयोजन ही क्या रहा?**

यदि हम अपनी मुक्ति के बारे में गंभीर हैं तो स्वाभाविक ही हमें भी प्रश्न उठना ही चाहिये कि क्या हम मोक्ष का मतलब समझते हैं?

मात्र परिभाषा ही नहीं हमें मोक्ष के स्वरूप का भावभासन होना अनिवार्य है। **जब तक हम मोक्ष को जानेंगे ही नहीं, उसका स्वरूप ही नहीं समझेंगे तब तक हमें मोक्ष की सच्ची अभिलाषा भी कैसे होगी?**

हाँ! यह सचमुच ही एक गंभीर स्थिति है।

हम मोक्ष को जाने–समझे बिना ही मोक्ष पाना चाहते हैं। यदि हमें मोक्ष का सच्चा स्वरूप समझ में आ जाये तो हो न हो कदाचित् हममें से अधिकतम लोगों की मोक्ष पाने की हमारी चाहत ही नष्ट हो जाये।

हममें से अधिकतम लोगों को मोक्ष मात्र इसलिये चाहिये कि वहाँ अनन्त सुख है, पर **सुख क्या है, मोक्ष में कैसा सुख है, यह जानने का हमने कभी प्रयास ही नहीं किया;** क्योंकि हम सब लोगों की 'सुख' की अपनी–अपनी परिभाषाएं हैं और 'यह सुख नहीं, सुख इन सबसे पृथक् कोई अनुपम वस्तु है'– इस बात की हमें कल्पना तक नहीं।

दरअसल **संसार में हम जिस क्षणिक इन्द्रिय सुखाभास को सुख मानते हैं, उसी कथित सुख की बड़ी मात्रा में अनन्त उपलब्धि की कामना से हमारे मन में मोक्ष प्राप्ति की चाहत ने आकार ले लिया है।** हम मोक्ष में भी यही खाने–खेलने का सुख निर्बाध रूप से पाना चाहते हैं। **वास्तविक मोक्ष सुख क्या है, हममें से अधिकतम लोगों को इसकी कल्पना तक नहीं है।**

हम सभी मात्र इन्द्रिय सुख को ही सुख मानते हैं, मोक्ष में मिलने वाले अतीन्द्रिय सुख का हमें ज्ञान ही नहीं है।

आज जब यह प्रश्न उठने पर कदाचित् हम मोक्ष सुख के बारे में जानने का प्रयास करें तो हो न हो हमें ऐसा मोक्ष प्राप्त करने की चाहत ही न रहे !

क्यों?

क्योंकि मोक्षसुख के स्वरूप में हमें सुख दिखाई तो दे, उसमें हमें सुख बुद्धि तो उत्पन्न हो, तभी तो हमें वह सुख प्राप्त करने की चाहत होगी न ! सच पूछा जाये तो अभी तो हम उक्त प्रकार के हालातों को दु:ख मानते हैं।

जरा कल्पना तो कीजिये –

न तो खाना और न ही खेलना, न वाहन और न आवागमन, न घूमना–फिरना और न सोना, न ही कुछ करना–धरना और न कुछ बनाना–मिटाना, न पढाई–लिखाई और न कमाई–धमाई, न किसी से किसी का प्यार–दुलार और न मान–सम्मान, न कोई छोटा–बड़ा और न कोई अपना–पराया, मर्ज भी नहीं, इलाज भी नहीं, भूख भी नहीं, भोजन भी नहीं।

किसी भी प्रकार का कोई भी मनोरंजन नहीं।

अकेले, जगत के समस्त परपदार्थों से निरपेक्ष, एकाकी, अनन्तकाल तक मात्र अपने स्थान पर स्थित रहकर आत्मध्यान में लीन रहना, बस! यह है मोक्ष सुख।

अब जरा विचार कीजिये कि **क्या यह हमें सुख सा लगता है?**

क्या हमें ऐसा ही बनना है, क्या हमें सचमुच ऐसा ही सुख चाहिये?

क्या यह जान लेने के बाद भी हममें मोक्ष की, मोक्षसुख की चाहत शेष रहती है?

इसप्रकार हम कह सकते हैं कि हम ऐसे मोक्षार्थी हैं, जिन्हें यह कल्पना तक नहीं कि आखिर मोक्ष कहते किसे हैं।

कदाचित् शास्त्रों में पढकर हमें उक्त प्रकार के असली मोक्षसुख के बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ भी हो और हम उसकी चर्चा भी करते हों पर क्या सचमुच हमारे मानस में सुख के उक्त स्वरूप के बारे में सुख बुद्धि उत्पन्न होती है?

जब हम अपनी पसंद के किसी स्वादिष्ट पकवान के बारे में चिन्तन करते हैं तो उसकी कल्पना मात्र से हमारे मुंह में पानी आ जाता है। यदि सिनेमा में हम कोई अच्छा मकान देखते हैं तो हम उसे हासिल कर लेना चाहते हैं। पांचों इन्द्रियों के विषयों के सन्दर्भ में हमारा यही हाल है।

मैं पूछता हूँ कि मोक्षसुख के बारे में जानने के बाद भी क्या कभी हमारे मन में ऐसी ही गलगलियाँ छूटी हैं? क्या शीघ्रातिशीघ्र ऐसा मोक्ष पाने की चाहत पैदा हुई? क्या मोक्ष के बारे में और अधिक जानने की रुचि जागृत हुई, ऐसा मोक्ष कैसे मिले, मोक्ष का मार्ग क्या है, यह जानने की अभिलाषा उत्पन्न हुई?

यदि नहीं, तो हम कैसे मोक्षार्थी हैं?

जैसे हम जगत के अनुपलब्ध भोगों को अपनी कल्पना में भोगते हैं, हम अपनी चाहत का विलासमय जीवन अपनी कल्पना में जीते हैं। हम अपनी लालसाओं का ब्लू प्रिंट तैयार करते हैं। उन ख्वाबों को साकार करने के साधन जुटाते हैं और फिर अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ अपने आपको उन्हें साकार करने में झोंक देते हैं। क्या ऐसा कुछ हमने कभी मोक्ष और मोक्षसुख के बारे में किया है?

यदि नहीं तो हम स्वयं ही फैसला करें कि हम कैसे मोक्षार्थी हैं?

उक्त समस्त चर्चा का आशय यह है कि अभी तो **हमें अपना लक्ष्य ही भलीभांति ज्ञात नहीं है,** इसप्रकार अभी तो हम किसी भी मिशन की सफलता की पहली शर्त ही पूरी नहीं करते हैं।

यदि हम सचमुच आत्मार्थी हैं और अपने इस जीवन में आत्मकल्याण की एक ठोस आधारशिला तैयार करना चाहते हैं, कुछ कदम ही सही, मोक्षमार्ग पर आगे बढना चाहते हैं तो हमें मोक्ष का स्वरूप समझने का उपक्रम करना चाहिये। मोक्षसुख किस प्रकार हमारी कल्पना के कथित संसारी, इन्द्रिय सुख से सर्वथा भिन्न जाति का है, ऐसा भेदज्ञान करना होगा। अपनी कल्पना में अपने आपको मोक्ष में स्थापित करके उस मोक्षसुख को जीना होगा, तब हमारे अन्दर मोक्ष पाने की ऐसी ज्वलंत चाहत पैदा होगी जो मोक्ष पाने के उग्र पुरुषार्थ की पूर्व शर्त है। **(क्रमशः)**

महाविद्यालय का सुयश

जयपुर (राज.) : यहाँ राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित **राज्य स्तरीय** साहित्यिक व खेलकूद प्रतियोगिताओं में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के 7 छात्रों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके अन्तर्गत अंग्रेजी वाद–विवाद प्रतियोगिता में पक्ष में प्रथम स्थान पवित्र जैन एवं विपक्ष में प्रथम स्थान आयुष जैन, हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता में विपक्ष में प्रथम स्थान आप्त अनुशीलन जैन, संस्कृत वाद–विवाद प्रतियोगिता में विपक्ष में प्रथम स्थान संयम जैन ने प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त बैडमिंटन में हितंकर जैन व अकलंक जैन एवं वॉलीबॉल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सम्मेद कोले का चयन किया गया। बैडमिंटन एवं वॉलीबॉल के छात्र जनरल स्टेट की प्रतियोगिताओं में भाग लेंगे।

टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

सर्वोदय अहिंसा अभियान संचालित करें

भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर पटाखों से होने वाली जन–धन हानि के प्रति लोगों को जागरूक करने हेतु अ.भा. जैन युवा फैडरेशन एवं श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के सहयोग से आयोजित सर्वोदय अहिंसा अभियान के अन्तर्गत विशाल रंगीन पोस्टर, हैंडबिल, संकल्प पत्र आदि प्रकाशित कर संपूर्ण देश के जिनमंदिरों, तीर्थक्षेत्रों, विद्यालयों एवं समाजसेवी संस्थाओं को भेजा जायेगा।

सभी से अनुरोध है कि स्थानीय स्तर पर यह अभियान चलायें। पोस्टर/हैंडबिल आदि प्राप्ति हेतु **संपर्क करें –** संजय शास्त्री, बी–180, ए–2, मंगल मार्ग, बापूनगर, जयपुर–302015 (राज.) अथवा 09785999100 नम्बर पर वाट्स अप करें।

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में साप्ताहिक गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 10 सितम्बर को उपाध्याय वर्ग के छात्रों द्वारा 'जिनागम का मूल : वीतराग–विज्ञानता' विषय पर गोष्ठी संपन्न हुई। गोष्ठी की अध्यक्षता श्रीमती कमला भारिल्ल ने की। श्रेष्ठ वक्ताओं में स्वस्ति जैन स्लीम्नाबाद (उपाध्याय कनिष्ठ) और आयुष जैन हटा (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे। गोष्ठी का संचालन प्रतीक जैन मौ व सिद्धार्थ जैन भिण्ड ने किया।

क्षमावाणी के अवसर पर –

मंगलायतन में डॉ. भारिल्ल

तीर्थधाम मंगलायतन–अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ क्षमावाणी पर्व के अवसर पर दिनांक 7 सितम्बर को तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा क्षमावाणी पर एवं दिनांक 8 सितम्बर को स्वपरप्रकाशक विषय पर प्रवचन का लाभ मिला।

आगम के आलोक में –

समाधिमरण या सल्लेखना

6

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

ज्ञानी जीवों का तो जीवन भी समाधिमय होता है मरण भी समाधिमय। वह तो श्रद्धा की अपेक्षा सदा समाधिमय ही होता है।

समाधिमरण मरने का व्रत नहीं है। आयु के अन्त में जब सहज भाव से मृत्यु नजदीक हो, अत्यन्त नजदीक हो तो **शान्ति से मरण को स्वीकार करना समाधिमरण है।**

ध्यान रहे **जो अनिवार्य है, उसी को सहज भाव से स्वीकार किया जाता है समाधिमरण में। यह न जीने का व्रत है और न मरने का व्रत है; यह तो सहजभाव से जो हो रहा है, उसे ही सहज भाव से स्वीकार करने का व्रत है।**

समाधिमरण और सल्लेखना पर लिखने वाले मनीषियों ने आरम्भ में समाधिमरण और सल्लेखना का स्वरूप स्पष्ट करने के उपरान्त सल्लेखना धारण करनेवालों को या स्वयं के मन को यह समझाने का प्रयास किया है कि मृत्यु से डरो मत। यह मृत्यु तो तुम्हें इस तनरूपी कारागृह (जेल) से छुड़ाने वाली है। यदि मृत्यु न होती तो तुम्हें इस सड़े-गले शरीर से कौन छुड़ाता?

पण्डित टोडरमलजी के सुपुत्र गुमानीरामजी वैराग्य रस से ओत-प्रोत एवं अध्यात्मरस के रसिया विद्वान् थे। उन्होंने तत्कालीन गद्य में समाधिमरण का स्वरूप लिखा है। वह मूलतः स्वाध्याय करने योग्य है।

समाधि के इच्छुक मनुष्यों को उसका स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये। उसमें उन्होंने यह सब लिखा है कि स्वयं को, तथा माता-पिता, पत्नी-पुत्र आदि को क्या समझाना चाहिये, कैसे समझाना चाहिये?

इसमें आचार्य कुन्दकुन्द के प्रवचनसार की चरणानुयोग-सूचक चूलिका की शैली की झलक दिखती है।

प्रवचनसार और उसकी तत्त्वप्रदीपिका टीका में दीक्षा लेने के लिये तैयार व्यक्ति अपने परिजन और पुरजनों को किस प्रकार समझावे – इसका नमूना दिया है; जो इसप्रकार है –

''वह बन्धुवर्ग से इसप्रकार पूछता है, विदा लेता है कि अहो! इस पुरुष के शरीर के **बन्धुवर्ग में प्रवर्तमान आत्माओ!** इस पुरुष का आत्मा किंचित्मात्र भी तुम्हारा नहीं है – इसप्रकार तुम निश्चय से जानो।

इसलिए मैं तुमसे विदा लेता हूँ। जिसे ज्ञानज्योति प्रगट हुई है – ऐसा यह आत्मा आज अपने आत्मारूपी **अनादि बन्धु के पास जा रहा है।**

अहो! इस पुरुष के शरीर के **जनक (पिता) के आत्मा!** अहो! इस पुरुष के शरीर की **जननी (माता) के आत्मा!** इस पुरुष का आत्मा तुम्हारे द्वारा जनित (उत्पन्न) नहीं है – ऐसा तुम निश्चय से जानो।

इसलिए तुम इस आत्मा को छोड़ो। जिसे ज्ञानज्योति प्रगट हुई है– ऐसा यह आत्मा आज अपने **आत्मारूपी जनक के पास जा रहा है, आत्मारूपी जननी के पास जा रहा है।**

अहो! इस पुरुष के शरीर की **रमणी (स्त्री) के आत्मा!** तुम इस पुरुष के आत्मा को रमण नहीं कराते – ऐसा तुम निश्चय से जानो।

इसलिए तुम इस आत्मा को छोड़ो। जिसे ज्ञानज्योति प्रगट हुई है – ऐसा यह आत्मा आज अपनी **स्वानुभूतिरूपी अनादि-रमणी के पास जा रहा है।** (क्रमशः)

१. प्रवचनसार, गाथा २०२ और टीका

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

17 से 24 सित.2017	जयपुर	शिक्षण शिविर
1 से 5 अक्टूबर 2017	श्रवणबेलगोला	विद्वत् सम्मेलन
16 से 20 अक्टू.2017	देवलाली	दीपावली
14 से 19 नव. 2017	झालरापाटन	पंचकल्याणक
24 से 28 नव. 2017	नागपुर	पंचकल्याणक
2 से 7 दिसम्बर 2017	शाश्वतधाम-उदयपुर	पंचकल्याणक
10 से 12 जन. 2018	मंगला.विश्व.-अलीगढ	सेमिनार
12 से 16 फर.-2018	ललितपुर	पंचकल्याणक

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

(पृष्ठ 1 का शेष...)

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर आदिनाथ जिनालय में प्रात: गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के उपरान्त डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा समयसार, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में जयपुर से पधारे पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री उदयपुर द्वारा आदिनाथ जिनालय में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं पार्श्वनाथ जिनालय में नयचक्र की कक्षा ली गई। प्रात: दशलक्षण मंडल विधान पण्डित सचिनजी, पण्डित ऋषभजी, पण्डित विवेकजी आदि स्थानीय विद्वानों द्वारा कराया गया। इसके अतिरिक्त डॉ.उत्तमचंदजी एवं पण्डित राजेन्द्रजी द्वारा ब्र.केशरीचंदजी धवल के साथ तत्त्वचर्चा भी हुई।

सोनागिर (म.प्र.) : यहाँ तलहटी स्थित कुन्दकुन्द नगर में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, पण्डित राजकुमारजी गुना द्वारा समयसार एवं विदुषी जीनलबेन देवलाली द्वारा नियमसार व पंचपरावर्तन विषय पर व्याख्यानों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' द्वारा नियमसार परमागम विधान कराया गया। साथ ही गुरुदेवश्री के वीडियो प्रवचन प्रोजेक्टर के माध्यम से दिखाये गये।

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ ज्ञानोदयतीर्थ में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर ब्र.हेमचंदजी 'हेम' द्वारा प्रात: समयसार पर प्रवचन, दोपहर को परीक्षामुख की कक्षा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन प्रात: समयसार पर एवं दोपहर को छहढाला पर हुआ। इसके अतिरिक्त पण्डित यशजी शास्त्री कोटा द्वारा प्रात: दशलक्षण मंडल विधान का आयोजन हुआ एवं प्रवचन का भी लाभ मिला।

मुम्बई : यहाँ बोरिवली में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म व मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित संयमजी शास्त्री द्वारा सार समयसार विधान का आयोजन हुआ।

मुम्बई : यहाँ भायन्दर (वेस्ट) मीरा रोड़ स्थित महावीर जिनालय में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: नित्य–नियम पूजन व दशलक्षण विधान का आयोजन हुआ। विधान के मध्य डॉ. संजीवजी द्वारा दशलक्षण धर्म पर मार्मिक उद्बोधन एवं तत्पश्चात् क्रमबद्धपर्याय विषय पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन सायंकाल आपके दो प्रवचन हुये– प्रथम प्रवचन में णमोकार महामंत्र, आत्मा–परमात्मा, छ: द्रव्य, सामान्य गुण, द्रव्यकर्म–भावकर्म–नोकर्म आदि अनेक विषयों पर लाभ मिला। द्वितीय प्रवचन में जैन भूगोल विषय पर सारगर्भित चर्चा की गई। एक दिन युवाओं के लिये विशेष उद्बोधन एवं शंका समाधान का कार्यक्रम रखा गया। स्थानीय विद्वान पण्डित वरुणजी शास्त्री द्वारा प्रतिदिन संपूर्ण मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रश्नोत्तरी का संचालन किया जाता था, आपके एवं मंगलार्थी केविन शाह के निर्देशन में दो दिन पाठशाला के बालकों द्वारा सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

प्रतिदिन गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का भी लाभ मिला। समस्त कार्यक्रम ट्रस्टी प्रमुख श्री सुनीलजी शाह के निर्देशन में संपन्न हुये। विधि–विधान के समस्त कार्य श्री राजेन्द्रजी गांधी एवं सहयोगियों द्वारा संपन्न कराये गये। कार्यक्रम में लगभग 600 साधर्मियों ने धर्म लाभ लिया।

इस प्रसंग पर मीरा रोड़ भायंदर की महापौर श्रीमती सौ.डिम्पल मेहता का एवं एम.एल.ए. श्री नरेन्द्र मेहता का सम्मान–समारोह भी रखा गया।

– सुनील शाह

देवलाली–नासिक (महा.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में प्रवचनसार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। जिनेन्द्र–पूजन व विधि–विधान के कार्य पण्डित दीपकजी धवल भोपाल द्वारा कराये गये।

मुम्बई : यहाँ सीमंधर जिनालय में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित शैलेषभाई तलोद द्वारा प्रात: समयसार पर एवं सायंकाल पंचपरावर्तन विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त प्रात: जिनेन्द्र पूजन, गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ किला अन्दर में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मंडल विधान के अतिरिक्त डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर एवं विदुषी स्वर्णलताजी नागपुर द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में प्रवचनसार विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला।

भोपाल : यहाँ चौक में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड द्वारा प्रात: समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में स्थानीय साधर्मियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

कोटा (राज.) : यहाँ रामपुरा में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर ब्र.कैलाशचंदजी 'अचल' ललितपुर द्वारा प्रात:काल समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

दिल्ली : यहाँ विश्वास नगर में श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान परमागम मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा प्रात:काल समयसार के आधार पर शुद्धात्मा के स्वरूप पर प्रवचन हुये एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म को अपने जीवन में उतारने की प्रक्रिया और स्वरूप पर प्रकाश डालते हुये तत्संबंधी विषय सम्यग्दर्शन, आत्मानुभूति, पांच लब्धि, अध्यात्म के नय और निमित्त–उपादान आदि विषयों को समझाया गया। रात्रि में बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

इस अवसर पर आध्यात्मिक पुस्तकालय का उद्घाटन ट्रस्ट के सदस्यों श्री सुनीलजी, श्री सोहनपालजी, श्री विकासजी, श्री सुशीलजी, श्री वज्रसेनजी, श्री के.के. जैन के सहयोग से किया गया।

– मंगलसेन जैन (कार्याध्यक्ष)

कलकत्ता : यहाँ पद्दोपुकुर स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा जैनधर्म के विभिन्न सिद्धांतों के आधार पर अत्यंत सरल व सुबोध भाषा–शैली में व्याख्यानों का

लाभ मिला; अनेक प्रकार की मिथ्या मान्यताओं का खण्डन हुआ।

आपके व्याख्यानों को सुनकर उपस्थित जनसमुदाय विशेषकर युवा वर्ग अत्यंत प्रभावित हुआ एवं जैनधर्म के प्रति अपूर्व श्रद्धा जागृत हुई। प्रवचनों से प्रभावित होकर अनेक साधर्मियों ने अभक्ष्य भक्षण का त्याग किया एवं स्वाध्याय करने का नियम लिया। इस जिनमंदिर के 11 वर्ष के इतिहास में प्रथम बार इतनी संख्या में तत्त्वजिज्ञासुओं का मेला लगा कि ग्राउण्ड फ्लोर पर टी.वी. स्क्रीन के माध्यम से प्रवचन सुनने की अलग से व्यवस्था करनी पड़ी। युवावर्ग तो प्रवचनों से इतना प्रभावित हुआ कि प्रवचन के 1 घंटे पहले ही आकर प्रवचन प्रारम्भ होने की प्रतीक्षा करता।

प्रवचनों को सुनकर लोग इतने प्रभावित हुये कि जो लोग कभी मंदिर नहीं आते थे, वे भी प्रतिदिन मंदिर आने लगे। सभी ने यह प्रण किया कि यदि जिनधर्म इतना सरल व अच्छा है तो क्यों न इसे पूरे विश्व में प्रचारित-प्रसारित किया जाये। इसके लिये अवश्य ही एक अभियान चलाया जाना चाहिये।

सायंकाल श्री प्रकाशभाई शाह द्वारा द्रव्यदृष्टि प्रकाश पर प्रवचन का लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य एवं जिनेन्द्र-भक्ति पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर द्वारा कराये गये।

मेरठ (उ.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रात: विभिन्न विषयों पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त बालकों एवं प्रौढों में जैनधर्म के संस्कार जागृत करने हेतु विशिष्ट व्याख्यान का भी आयोजन हुआ।

मुम्बई : यहाँ मलाड (वेस्ट) में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में सोलहकारण भावना व दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर द्वारा प्रात: पूजन-विधान, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा एवं सायंकाल बालकक्षा आयोजित की गई। रात्रि में प्रवचनोपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रम विदुषी तापसी जैन मुम्बई ने श्रीमती संगीता जैन दिल्ली के सहयोग से संपन्न कराये। **– बिपिन शास्त्री, मुम्बई**

गुना (म.प्र.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान मुमुक्षु मण्डल में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा प्रात: समयसार एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में पंचपरावर्तन पर एवं अन्तिम 4 दिन तीन लोक पर विशेष कक्षा ली गई। रात्रि में महिला मण्डल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

टीकमगढ (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर ज्ञानमन्दिर में पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर द्वारा प्रात: समयसार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में ब्र.मीना दीदी टीकमगढ द्वारा कक्षा ली गई। सायंकाल बालकों की पाठशाला एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित नयनजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा कराये गये। रात्रि में प्रथम प्रवचन पण्डित अरविन्दजी शास्त्री, पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित निशंकजी शास्त्री, मंगलार्थी सर्वार्थजी, आत्मार्थी आन्या आदि स्थानीय विद्वानों द्वारा हुये। दिनांक 29 अगस्त को उदयपुर पंचकल्याणक आमंत्रण देने हेतु आये पण्डित अजितजी अलवर द्वारा प्रवचन का लाभ मिला। दिनांक 3 सितम्बर को झालरापाटन पंचकल्याणक का आमंत्रण भी आगन्तुक महानुभावों द्वारा दिया गया। **– संजय जैन 'हल्ले'**

कोलाघाट (कलकत्ता) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित चिन्मयजी शास्त्री कोटा द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में द्रव्य-गुण-पर्याय एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

ठाकुरगंज (बिहार) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रात: रत्नकरण्ड श्रावकाचार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

समाज के विशेष आग्रह पर दिनांक 2 सितम्बर को 'अहिंसा' विषय पर व्याख्यान भी आयोजित किया गया। **– ज्ञानचंद जैन**

धूलिया (महा.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित गौरव शास्त्री कारंजा द्वारा रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। एक दिन नन्दूरबार (महा.) में भी दिगम्बर जैन मंदिर में दशलक्षण धर्म के सार पर प्रवचन का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त मांगीतुंगी तीर्थक्षेत्र की तलहटी में स्थित दिगम्बर जैन चैत्यालय में क्षमावाणी पर प्रवचन हुआ।

गढाकोटा (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण पर्व के अवसर पर पण्डित अमनजी शास्त्री दिल्ली द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में गुणस्थान विवेचन एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। **– सचिन्द्र शास्त्री**

खतौली (उ.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित निर्मलकुमारजी एटा द्वारा तीनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित अर्पितजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रात: दशलक्षण मंडल विधान एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री महावीर जिनालय में पण्डित सचिनजी मंगलायतन द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। **– प्रमोद जैन, विदिशा**

प्रकाशन तिथि : 13 सितम्बर 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com